



उपकार कैरियर डेवलपमेंट सीरीज

असली कामयाबी

REAL SUCCESS



Over 120 Examples & 200 Quotations + Useful Notes + Tables & Illustrations

राधारमण अग्रवाल

दो शब्द

आज तेजी से उपभोगवादी संस्कृति के पनप जाने से अधिकांश व्यक्तियों (विशेषकर युवा-पीढ़ी) की मानसिकता में सफलता का अर्थ है—असीम धन—संपत्ति तथा ख्याति प्राप्त कर भौतिक सुख व ऐश्वर्य को भोगना। यहीं तक उनका जीवन—लक्ष्य सीमित है। यही एक मंजिल है, जिसे वे पाने की चाह रखते हैं, लेकिन इससे बढ़कर आगे की सोच उन लोगों की होती है जो मानव—जीवन का महत्त्व समझते हुए वर्तमान जीवन की उपयोगिता का असली अर्थ जानते हैं, क्योंकि गीता के अनुसार जीवन का अस्तित्व मृत्यु के बाद भी कायम रहता है (Life exists even beyond death)। इस स्थिति में वह जीवन की स्थायी सफलता अथवा उपलब्धि नहीं कही जा सकती है।

चूंकि हमारी चेतना भ्रमों के आवरण से प्रच्छन्न रहती है, हम अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचान पाते और केवल अपनी इन्द्रिय—विषयों के भोग—परायण रहते हैं। विचारक **हैनरिक इब्सन** के अनुसार मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है—भ्रमों का निवारण करके अपनी शुद्ध चेतना में स्थित होकर जीवन की वास्तविकता को जान लेना।

असली कामयाबी (Real Success) का अर्थ जीवन की वास्तविकता से जुड़ा है। इसमें 'मेरा' अथवा ममत्व एवं अपनत्व (यानि Individuality) के लिए कोई स्थान नहीं है। इसमें तो विश्व—बंधुत्व (Universal Brotherhood) का भाव भरा है। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है, जो संसार में रहकर अपना ऊंचा स्वाभिमान (High Self-esteem) बना सकता है, लेकिन यह तभी संभव है जब वह अहंकार से शून्य हो, अर्थात् एक विकार रहित व्यक्तित्व से संपन्न हो।

स्पष्ट है, चिंता रहित जीना, सरलता से आनंदित होना और दूसरों के लिए उपयोगी बनने में ही असली कामयाबी का रूप झलकता है, जिसका अस्तित्व स्थायी (Stable) है और इसी में मनुष्य का सार्थक जीवन (Significant life) निहित है। **अल्बर्ट आइन्सटीन** ने कहा है —

***'Try not to become a man of success
but rather to become a man of value.'***

यदि देखा जाए तो दूसरों की भलाई करते हुए स्वयं की उन्नति में ही मनुष्य का वास्तविक जीवन (Real life) है और ऐसे वास्तविक मनुष्य (Real man) में ईश्वर भी अपनी सफलता देखता है और उसे महानता प्रदान करता है। इसलिए **Seneca** ने कहा है – **‘As long as you live, keep learning how to live.’** (अर्थात् जब तक जीवित रहो, जीवित रहना सीखते रहो)

वास्तविक जीवन को लक्ष्य करते हुए मैंने **‘असली कामयाबी’** विषय पर यह पुस्तक लिखने का प्रयास किया है, जो प्रचलित सफलता से कहीं ज्यादा बढ़कर है। ऐसी सफलता में अनिवार्यतः जीवन के नैतिक मूल्यों (Ethical values of life) का समावेश होता है। अतः मैंने प्रस्तुत पुस्तक में जीवन-उन्नति के सभी आवश्यक तत्वों, जैसे— मानव-प्रेम, मन की शुद्धि एवं शक्ति, पॉजिटिव एटिट्यूड, कर्तव्य-भावना, पुरुषार्थ, सकारात्मक सोच के साथ लक्ष्यों का निर्माण व एक्शन प्लान, स्वाभाविक अवगुणों को सही दिशा, आदि का पूर्ण विवेचन किया है और साथ में प्रेरक उदाहरण एवं सूक्तियों के जरिए सभी तथ्यों को समझाया है। मुझे आशा है, आप इस पुस्तक से अवश्य लाभान्वित होंगे।

अंत में, मेरा यह प्रयास कहाँ तक आपके उद्देश्य की पूर्ति में सफल है, यह तो आपसे ही पता लगेगा। अतः आप अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव सदैव की भाँति इस बार भी मुझे लिखकर अवश्य भेजें।

शुभकामनाओं सहित

– राधारमण अग्रवाल

41, देवी पथ, तख्तेशाही मार्ग,
जयपुर-302004

क्या-कहाँ

	पृष्ठ संख्या
1. असली कामयाबी क्या है?	1-7
2. उन्नति की पहली सीढ़ी – मानव प्रेम	8-10
3. अध्यात्म में है जीवन का प्रकाश	11-15
4. 'सत्य' में भाग्योदय है	16-22
5. ईमानदारी में सच्ची कामयाबी है	23-26
6. 'आत्ममोह' (Narcissism) से बचें	27-34
7. पॉजिटिव विचार से बनते हैं महान कार्य	35-39
8. सही नजरिया से बनती है प्रभावी सोच	40-45
9. मन की शक्ति का आभास करें	46-55
10. भय-मुक्त जीवन के लिए नजरिया बदलें	56-64
11. 'चरित्र' के बिना व्यक्तित्व अधूरा है	65-76
12. प्रेरणादायक तथ्य	77-92
13. सार्थक जीवन हेतु उद्देश्य का निर्धारण	93-98
14. सकारात्मक जीवन (Positive Life)	99-108
15. 'भाग्य' से बढ़कर 'पुरुषार्थ' है	109-116
16. पुरुषार्थ क्या है? (कुछ जीवनियाँ)	117-129
17. गट्स के साथ फॉर्चून भी है	130-136
18. कर्तव्य की भावना जीवन को महान बनाती है	137-150
19. कुछ बनना है तो 'संघर्ष' करना ही होगा	151-162
20. लक्ष्य-संबंधी विशेष बातें	163-178
21. 'क्रोध' को सही दिशा दीजिए	179-190
22. पांच 'P' हासिल करें	191-194
उदाहरण – सूची	195-198

उन्नति की पहली सीढ़ी – मानव प्रेम

संसार में रहकर **आत्मिक-उन्नति** (Self-improvement) करना हर विवेक-युक्त जीव का कर्तव्य है। इसी में मानव-जीवन की सार्थकता है। यह तभी संभव है जब हम अपने मन की मलिनता (Impurity of mind) को हटाकर 'समभाव' (Nature of equality) ग्रहण करें। इस संदर्भ में **महावीर स्वामी** की वाणी है – '**जीओ और जीने दो**' (Live and let live)। **जीसस क्राइस्ट, महात्मा गांधी** आदि महापुरुषों ने भी मानव-प्रेम को ईश्वर की सेवा बतलाया है। ईश्वर ने तो 'प्रेम' मनुष्य को उपहारस्वरूप दिया है, जैसा कि उसकी प्रकृति में 'गुलाब' को प्रेम का प्रतीक माना गया है। गुलाब तो कांटों में पैदा होकर दुनिया को महकाता है, मुरझाने पर भी अपनी सुगंधि नहीं त्यागता और गुलकंद के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इसीलिए **रवीन्द्रनाथ टैगोर** ने कहा है – '**अगर तुम्हारे पास दो रोटी हैं तो उनमें से एक को बेचकर गुलाब ले आओ**, 'जिसका अर्थ है मानव-प्रेम को जीवन का अंग मानो।

डिजरायली का कथन है –

'We are all born for love... It is the principle of existence and its only end.'

हम सब प्रेम करने के लिए जन्म लेते हैं। यह अस्तित्व का सार है और यही जीवन का साध्य है।

अब प्रश्न है, **प्रेम कैसा हो?** चूंकि हम अधिकांशतः 'खाओ-पिओ, मौज उड़ाओ' वाली पाश्चात्य संस्कृति को एक बेहतर जीने की कला समझ रहे हैं, इस पर गौर करना आवश्यक है –

एक बार **बृज-गोपियों** ने श्रीकृष्ण से मानव-प्रेम पर प्रश्न करते हुए पूछा कि आपकी दृष्टि में इन तीनों में से कौनसा व्यक्ति श्रेष्ठ है?

1. कुछ लोग ऐसे होते हैं जो प्रेम करने वालों से ही प्रेम करते हैं।
 2. कुछ लोग प्रेम न करने वालों से भी प्रेम करते हैं, परन्तु
 3. कुछ लोग ऐसे होते हैं जो इन दोनों प्रकार के लोगों से प्रेम नहीं करते।
- इन प्रश्नों के उत्तर में श्रीकृष्ण ने कहा –

- जो प्रेम करने पर प्रेम करते हैं, उनका प्रेम तो केवल स्वार्थ को लेकर है, अर्थात् लेन-देन का व्यापार है। ऐसा प्रेम स्वार्थ के घटते-घटते कम हो जाता है और अंत में समाप्त हो जाता है।
- जो लोग प्रेम न करने वालों से भी प्रेम करते हैं, उनका प्रेम सौहार्द से भरा होता है और सच पूछो तो उनके व्यवहार में निश्चल सत्य एवं पूर्णधर्म भी है।
- अब जो प्रेम करने वालों से भी प्रेम नहीं करते, ऐसे लोग चार प्रकार के होते हैं –

- * एक तो वे, जो अपने स्वरूप में ही मस्त रहते हैं,
- * दूसरे वे, जिनका किसी से कोई मतलब नहीं है,
- * तीसरे वे, जो जानते ही नहीं कि हमसे कौन प्रेम करता है, और
- * चौथे वे हैं, जो जान-बूझकर अपना हित करने वाले परोपकारी लोगों से भी द्रोह करते हैं, उनको सताना चाहते हैं।

और अंत में उन्होंने कहा – ‘मैं तो प्रेम करने वालों से भी प्रेम का वैसा व्यवहार नहीं करता, जैसा करना चाहिए, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि उनकी चित्त-वृत्ति मुझमें लगी रहे।’



निष्कर्ष

श्रीकृष्ण के उपर्युक्त अंतिम वाक्य से यह निष्कर्ष निकलता है कि निःस्वार्थ भाव से प्रेम करना ही असली मानव-प्रेम है, क्योंकि इसमें किसी के अनुकूल अथवा प्रतिकूल व्यवहार की अपेक्षा नहीं रहती। इसी में आपके व्यक्तित्व का निर्माण है।*



*श्रीमद्भागवत् (दशम स्कंध, अध्याय 32, श्लोक संख्या 16-20)

याद रखें ...

‘प्रेम तत्व को समझने के लिए हमें अपने चरित्र में संयम लाना होगा। प्रेम एक ऐसा तत्व है, जिसमें किसी कामना या वासना की लेशमात्र गंध नहीं है। यह मानसिक उत्थान के लिए है। यह निजी स्वार्थ से परे है, इसमें केवल पर-कल्याण की भावना निहित है। ‘प्रेम’ त्याग से परिपूर्ण है... इसका स्वभाव बड़ा विचित्र है – यह ‘देना’ जानता है, ‘लेना’ नहीं, क्योंकि त्याग की भावना से ही प्रेम पनपता है, बढ़ता है, त्याग के बिना तो प्रेम का विकास संभव ही नहीं। गुरु गोविन्द सिंहजी के बच्चों में धर्म के प्रति प्रेम था, उन्होंने उसके लिए हंसते-हंसते अपने प्राणों की बलि दे दी।’

जिसका मन स्वच्छ है, उसमें हर मानव के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है और प्रेम के उत्पन्न हो जाने पर मन व बुद्धि स्वतः उसी में अर्पण हो जाते हैं। ऐसा प्रेमी किसी भी जगह पहुंचकर सबको अपना मित्र बना लेगा और वह जीवन के हर मोड़ पर अपने लक्ष्य को साधते हुए आगे बढ़ता ही रहेगा। ऐसी है मानव-प्रेम की शक्ति, जो मनुष्य को संसार में अमरत्व प्रदान कर सकती है।

अतः एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के निर्माण की पहली सीढ़ी है— मानव-प्रेम। यहीं से आपके जीवन की सफलता का क्रम शुरू होता है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा है —

‘All love is expansion, all selfishness is contraction. Love is therefore, the only law of life. He who loves, lives; he who is selfish is dying. Therefore, love for love’s sake. Because, it is the only law of life.’



अध्यात्म में है जीवन का प्रकाश

संसार की सारी प्रगति का कारण आध्यात्मिक शक्ति ही है और यही शक्ति मानव के हृदय में प्रेरणा—रूप में निवास करती है। भले ही हम लोग आविष्कारकों को नास्तिक मानते हों, पर यह सत्य है कि उनके साथ ईश्वरीय शक्ति ही थी। कोई भी महान व्यक्ति, कलाकार, नायक और वैज्ञानिक उसी ईश्वर की प्रेरणा से अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा कर सका है। आविष्कारकों के मन में कुलबुलाती लगन, बेकसी और धुन क्या है? वही ईश्वरीय प्रेरणा है। जब ईसा मसीह कहते थे कि स्वर्ग का राज्य आप ही के भीतर है तो इसका मतलब यही था कि विश्व की योग्यताओं और शक्तियों का स्रोत आप ही के भीतर है। हमारा हृदय अदृश्य रूप से परमात्मा के साथ जुड़ा है। अतः जीवन में कुछ पाने के लिए यह आवश्यक है कि आप विश्वास रखें कि आप सर्वशक्तिमान ईश्वर के अंश हैं। आपको उसे कहीं बाहर नहीं खोजना है, अपने भीतर ही झांकना है।

इमर्सन ने कहा है —

***‘If you want people believe in God,
let people see what God can make you like.’
(यदि तुम चाहते हो कि लोग परमात्मा में विश्वास करें, तो
अपने व्यवहार द्वारा लोगों को दिखा दो कि परमात्मा तुमको
कैसा बना सकता है।)***

- **राबिया** परम विदुषी थी। एक दिन गांव वालों ने देखा कि वह अपनी झोंपड़ी के बाहर गली में कुछ ढूंढ़ रही थी। बेचारी बुढ़िया की मदद करने सारे लोग इकट्ठे हो गए। लोगों ने पूछा, ‘क्या ढूंढ़ रही हो?’

12 >> असली कामयाबी

वह बोली – ‘मेरी सुई खो गई है, उसे ढूँढ रही हूँ।’ यह सुनकर सभी जन सुई खोजने में जुट गए। तभी किसी को ख्याल आया कि राबिया से यह तो पूछ लें कि उसकी सुई खोई कहां है? एक ने पूछा, ‘मौसी, गली तो बहुत बड़ी है। तुम बता सकती हो कि सुई कहां गिरी है?’ राबिया बोली, ‘सुई तो घर के अंदर गिरी थी।’ गांव वाले बोले, ‘मौसी, तुम भी कमाल करती हो... सुई अगर घर के भीतर गिरी है तो तुम उसे बाहर क्यों ढूँढ रही हो?’ राबिया बोली, ‘क्योंकि यहां रोशनी है, घर के भीतर अंधेरा है।’ इस पर एक गांव वाले ने कहा, ‘भले ही यहां रोशनी है, लेकिन सुई जब यहां खोई ही नहीं तो हमें मिल कैसे सकती है? इसे खोजने का एकमात्र तरीका है कि वह जहां गिरी है वहां रोशनी करो और वहीं ढूँढो।’ यह सुनकर वह बुढ़िया खिल-खिलाकर हंस पड़ी और बोली – ‘छोटी-छोटी चीजों में तुम बड़े होशियार हो। अपने जीवन में यह होशियारी कब काम में लाओगे? मैंने तुम सबको बाहर खोजते देखा है और मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम जो खोज रहे हो, वह भीतर खोया है। तुम क्यों बाहर आनंद खोज रहे हो? क्या तुमने उसे बाहर खोया है?’ यह सुनकर गांव वाले ठगे से खड़े देखते रह गए और राबिया अपनी झोंपड़ी में चली गई।



निष्कर्ष

ईश्वर के साथ एकता स्थापित कर हम अपने सच्चे स्वरूप को पहचान लेते हैं। हमें विश्वास हो जाता है कि हमारे भीतर भी एक **दिव्यता** (Divinity) है, एक अलौकिक शक्ति है जो हमारे जटिलतम कार्य को भी सहज बना देती है। अतः जरूरी है, आत्म-उन्नति के लिए आप प्रतिदिन सुबह पंद्रह-बीस मिनट आध्यात्मिक चिंतन में अवश्य लगाएं, जिससे आपका मन निर्मल बना रहे और मन की एकाग्रता को बल मिले।



जॉन कीट्स ने लिखा है –

*'Beauty is truth, truth is beauty;
That is all ye know on earth,
and all ye need to know.'*

सुन्दरता सत्य है, सत्य ही सुन्दर है, यही जीवन का सार है।
इस धरा पर तुम इसको जानो और जानने योग्य है।

- एक ब्राह्मण रात्रि में अपने घर के बाहर बैठा था। तभी एक स्त्री सामने से गुजरी और ब्राह्मण ने उसे रोककर पूछा – 'आप कौन हैं, देवी? इस घोर रात्रि में कहां जा रही हो?' स्त्री बोली – 'मैं लक्ष्मी हूं, इस नगर को छोड़कर जा रही हूं।' 'ठीक है, जाओ' – ब्राह्मण ने कहा। कुछ देर पश्चात् एक अन्य स्त्री के निकलने पर ब्राह्मण ने उससे वही प्रश्न किया, जिसके उत्तर में वह बोली – 'मैं कीर्ति हूं और यहां से जा रही हूं।' ब्राह्मण ने कहा – 'शौक से जाओ।' इसके बाद उसने एक पुरुष को आते देखा, तो उठकर उससे मार्ग में वही बात पूछी। पुरुष बोला – 'मैं सत्य हूं और नगर को छोड़कर जा रहा हूं।' यह सुनकर ब्राह्मण चिंतित हो उठा और लपककर सत्य के चरणों में गिर पड़ा और गिड़गिड़ाकर कहने लगा – 'नहीं, भगवन्! आप यहां से न जाएं, आपके जाने के बाद तो यहां कुछ भी नहीं बचेगा, सारा जीवन विकृत हो जाएगा। मैं आपको यहां से नहीं जाने दूंगा, भले ही मेरे प्राण निकल जाएं।' उस परोपकारी ब्राह्मण की अनुनय-विनय पर सत्य ने वहां अपने रुकने की सहमति दे दी। तब ब्राह्मण को संतोष हो गया।

कुछ ही क्षणों में लक्ष्मी और कीर्ति को वापिस आते देखकर ब्राह्मण मुस्कराया और उनसे बोला – 'आप दोनों तो चली गईं थीं, अब क्या हुआ?' यह सुनकर वे बोलीं – 'हे ब्राह्मण देव! जहां पर सत्य है, वहां से हम कभी नहीं जा सकतीं। अब हमें यहीं रहना होगा।'



‘आत्ममोह’ (Narcissism) से बचें

जब किसी व्यक्ति के अंदर ‘मैं’ की भावना चरम सीमा पर पहुंच जाती है, तब वह ‘आत्ममोह’ (Narcissism or self-infatuation) से पीड़ित होकर अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर पाता। इस ‘मैं’ के कारण वह स्वयं को दूसरों से भिन्न समझने लगता है और उनसे विशेष बर्ताव की अपेक्षा रखता है। ‘मैं’ का अर्थ ‘मोह’ है, जिससे अहंकार (Egoism) की उत्पत्ति होती है। जब तक ‘मैं’ और ‘मेरा’ तथा ‘मैं भी कुछ हूं’ का अहंकार नहीं मिटेगा, तब तक वह महानता की कल्पना नहीं कर सकता। **श्रीकृष्ण** ने ‘आत्ममोह’ को ‘जीव का शत्रु’ बतलाया है। अहंकार मनुष्य की तुच्छता का प्रतीक है, जैसा कि **वाल्टेयर** ने कहा है— **‘मनुष्य जितना छोटा होता है, उसका अहंकार उतना ही बड़ा होता है।’**

आत्ममोह क्यों होता है? इसका उत्तर है — अपनी शुद्ध चेतना में स्थिर न होकर अपने स्वरूप को न जानना, अर्थात् अज्ञानता में रहना। चेतना (Conscience) का स्वरूप है — ‘मैं हूं,’ जिसका अर्थ है, ‘मैं शरीर में स्थिर हूं,’ अर्थात् Existence of living entity. यह अहंकार नहीं है, बल्कि आत्मतत्त्व का यथार्थ बोध है। लेकिन जब किसी व्यक्ति को अनायास अथवा अपनी योग्यता से अधिक सफलता कम समय में या कम परिश्रम में मिल जाती है, तब वह Superiority complex का शिकार होकर अभिमानपूर्ण व्यवहार करने लगता है।

शेक्सपीयर ने लिखा है —

‘Small things make base men proud.

छोटी-छोटी चीजें अयोग्य मनुष्यों को घमंडी बना देती है।

भय-मुक्त जीवन के लिए नजरिया बदलें

भय मनुष्य का इतना घातक एवं प्रबल शत्रु है कि इसे 'राक्षस' कहा गया है। संसार के अधिकतर लोग उसके शिकार हैं, लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि यह शत्रु अस्तित्वहीन है। इसकी अपनी कोई शकल नहीं है, फिर भी इस दुष्ट राक्षस के वश में होकर मनुष्य अपना आत्म-विश्वास, गौरव, अपनी प्रतिष्ठा और ईश्वर प्राप्त सभी शक्तियों को भुला बैठता है और सफलता से वंचित रह जाता है।

- असफल नहीं होते हुए भी हम असफलता के भय से कांप उठते हैं।
- निरोगी होते हुए भी रोग के भय की भावना व्यक्ति को खोखला बना देती है।
- निर्धन हो जाने की भावना उसे दीन-हीन बना देती है।

कहां से होता है भय का जन्म? भय की रचना हमने स्वयं की है। यह हमारे कमजोर मन की देन है। हमारे अपने विचार, हमारी अपनी कल्पनाएं ही इसे जन्म देती हैं। निर्बल मन सकारात्मक बातें न सोचकर सदा नकारात्मक बातें सोचता है। ऐसा व्यक्ति स्वयं को स्वस्थ एवं प्रकृतिस्थ महसूस नहीं करता। वह हर पल स्वयं को असहज महसूस करता है। वह अंदर से टूटा-सा रहता है और जितना वह भय से दूर भागने की कोशिश करता है, यह उतना ही उस पर हावी होता है। शत्रु की ऐसी ही प्रकृति होती है। **फ्रेंकलिन रूजवेल्ट** ने कहा है – *'The only thing we have to fear is fear itself.'* वास्तव में भय मन का कोरा भ्रम है, यह हमारे मन की व्यर्थ उपज है, जैसा कि **अरस्तू** ने भी कहा है।

अब प्रश्न है, क्यों पैदा होता है भय?

इमर्सन के शब्दों में **'Fear always springs from ignorance.'** सीमित ज्ञान होने के कारण हम उन दिव्य शक्तियों के प्रति जागरुक नहीं हो पाते जो हमारे अंदर मौजूद हैं, क्योंकि हम स्वयं को अपनी देह तक सीमित मानकर अपने चैतन्य स्वरूप को भूल जाते हैं। जीव और प्रकृति दोनों ईश्वर की शक्तियां हैं, जिनसे मिलकर इस भौतिक सृष्टि का निर्माण हुआ है। जीव सनातन होने के कारण मृत्यु के बाद भी उसका जीवन है। चूंकि हमारा दृष्टिकोण जीवन के प्रति सीमित होता है, हमें अपने साधनों एवं सम्भावनाओं का पूरा ज्ञान नहीं हो पाता, जबकि हमारे अंदर शक्ति का विशाल भंडार सुरक्षित है। अज्ञानता के कारण हम स्वयं को उस परम दिव्य शक्ति से पृथक् मान लेते हैं और भय, शंका आदि मनोविकारों से ग्रस्त रहते हैं। सच तो यह है कि वह महान शक्तिमान (ईश्वर) निर्भय और निर्विकार है और सभी प्राणियों में उसका अंश विद्यमान है, तब ऐसी स्थिति में हम उससे पृथक् कैसे हो सकते हैं? हमारे लिए भय का स्थान कहां रह जाता है? अतः आवश्यकता है, निर्भय जीवन का अर्थ जानने की।

श्री अरविंदो ने कहा है –

***'Fear is always to be rejected,
because what you fear is just the thing
that is likely to come to you.'***



- एक बार एक व्यक्ति ने **लियो टॉल्स्टॉय** से पूछा, **'जीवन क्या है?'** उन्होंने एक क्षण उस व्यक्ति की ओर देखा, फिर कहा – 'एक बार एक यात्री जंगल से गुजर रहा था। अचानक एक जंगली हाथी उसकी तरफ झपटा, बचाव का अन्य कोई उपाय न देखकर वह रास्ते के एक कुएं में कूद गया। कुएं के बीच में बरगद का एक मोटा पेड़ था। यात्री उसी की एक जटा पकड़कर लटक गया। कुछ देर बाद उसकी निगाह कुएं में नीचे की ओर गई, नीचे एक विशाल मगरमच्छ अपना मुंह फाड़े उसके नीचे टपकने का इंतजार कर रहा था। डर के मारे उसने अपनी निगाह ऊपर कर ली। ऊपर उसने देखा कि शहद के एक छत्ते से बूंद-बूंद मधु टपक रहा था। स्वाद

प्रेरणादायक तथ्य (Inspiring Examples)

सत्य, ईमानदारी, निःस्वार्थ भाव, कर्तव्य परायणता, सादगी, वफादारी, दूसरों के प्रति आदर भाव आदि ऐसे अनेक नैतिक गुण हैं, जिनका मिला-जुला रूप ही 'चरित्र' कहलाता है जो हमारे व्यवहार और कार्यों में प्रकाशित होता है। इससे संबंधित कुछ उदाहरण आप पहले देख चुके हैं। ऐसे कुछ और भी उदाहरण यहां दिए जा रहे हैं, जिससे आप सभी तत्वों को समझ लेंगे जो चरित्र निर्माण के स्तम्भ (Pillars) माने जाते हैं –

- (1) संधि का प्रस्ताव असफल होने पर जब **श्रीकृष्ण** हस्तिनापुर लौट चले, तब **महारथी कर्ण** उन्हें सीमा तक विदा करने आए। मार्ग में कर्ण को समझाते हुए श्रीकृष्ण ने कहा – 'कर्ण, तुम सूतपुत्र नहीं हो। तुम तो महाराजा पांडु और देवी कुंती के सबसे बड़े पुत्र हो। यदि तुम **दुर्योधन** का साथ छोड़कर पांडवों के पक्ष में आ जाओ तो तत्काल तुम्हारा राज्याभिषेक कर दिया जाएगा।'

यह सुनकर कर्ण ने उत्तर दिया – "वासुदेव, मैं जानता हूं कि मैं माता कुंती का पुत्र हूं, किन्तु जब सभी लोग सूतपुत्र कहकर मेरा तिरस्कार कर रहे थे, तब केवल दुर्योधन ने मुझे सम्मान दिया। मेरे भरोसे ही उसने पांडवों को चुनौती दी है। क्या अब उसके उपकारों को भूलकर मैं उसके साथ विश्वासघात करूं? ऐसा करके क्या मैं अधर्म का भागी नहीं बनूंगा? मैं यह जानता हूं कि युद्ध में विजय पांडवों की होगी, लेकिन आप मुझे अपने कर्तव्य से क्यों विमुख करना चाहते हैं?" कर्तव्य के प्रति कर्ण की निष्ठा ने श्रीकृष्ण को निरुत्तर कर दिया।

चलते-चलते

एक राजा के तीन पुत्र थे – सभी सुयोग्य आज्ञाकारी और पराक्रमी। वह चिंतित था कि ऐसी स्थिति में किसको अपना उत्तराधिकारी बनाया जाए। उसने राजगुरु को अपनी दुविधा से अवगत कराया और समस्या का समाधान करने का दायित्व उन पर सौंप दिया।

राजगुरु ने तीनों कुमारों को बुलाकर उनसे एक प्रश्न किया— ‘राजकुमारो! यदि तुम्हारे राज्य में बुरे आदमी की खबर मिले, तो सबसे पहले क्या करोगे?’

पहले राजकुमार ने कहा – ‘मैं तत्काल उसे प्राणदंड दूंगा।’

दूसरे राजकुमार ने कहा – ‘मैं पहले पूरी जांच करूंगा और अपराध प्रमाणित हो जाने पर उसे जेल की सजा दूंगा।’

अब **तीसरे** ने कहा – ‘मैं पहले यह देखूंगा कि अमुक दोष या गलती मुझमें तो नहीं है। यदि है तो पहले मैं स्वयं को सुधारूंगा और उसके बाद अपराधी के बारे में सोचूंगा।’

राजगुरु ने तीसरे राजकुमार के पक्ष में अपनी राय राजा को दे दी और राजा ने उसे अपने राज्य का स्वामी बना दिया।

इस उदाहरण में तीसरा राजकुमार चारित्रिक गुणों से भलीभांति परिचित है। जीसस ने भी कहा था – ‘किसी लांछित को सजा देने वाला व्यक्ति पहले स्वयं सोचे, अपने से भी प्रश्न करे कि क्या वह पूरी तरह से निर्विकार है, निष्कलुष है? उसे चाहिए कि दूसरे पर आक्षेप लगाने से पहले स्वयं को कटघरे में खड़ा करे।’ संत कबीर ने भी चरित्रवान की यह विशेषता अपने दोहे में इस प्रकार से बतलाई है –

‘बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिल्या कोय।

जो दिल खोजा आपुना, मोसे बुरा न होय।’



सार्थक जीवन हेतु उद्देश्य का निर्धारण

किंसी अज्ञात ने लिखा है –

**‘मानव ईश्वर की कैसी कृति (What a piece of work) है।
बुद्धि में कितना श्रेष्ठ (How noble in reason), प्रतिभा
(Faculty) में कितना असीम (Infinite), रूप और आचरण
में कितना प्रशंसनीय (Admirable)। कार्यों में कितना
फरिश्ता (Angle) के समान। और उद्देश्यों में कितना
देवतुल्य (Like a deity)।’**

- सृष्टि से पूर्व परमात्मा ने मिट्टी से मनुष्य का पुतला बनाया और देवताओं को बुलाकर उन्होंने वह पुतला दिखाते हुए उनसे कहा – ‘देखो, यह मेरी सर्वश्रेष्ठ रचना है – ‘मनुष्य।’ इस पर देवगण अचम्भित होकर बोले – ‘भगवन!’ जब आप इसे अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना कहते हैं तो इसे मिट्टी की बजाय किसी अन्य बहुमूल्य पदार्थ से आपको बनाना चाहिए था। उनकी बुद्धि पर परमात्मा पहले तो हंसे और फिर उन्हें समझाते हुए बोले – ‘देखो, जिस प्रकार मिट्टी में उर्वरा-शक्ति है और उससे बहुमूल्य वस्तुएं पैदा होती हैं, उसी प्रकार मनुष्य में विवेक-शक्ति है। उससे भी अनेक संभावनाएं हैं, आशाएं हैं... संसार में रहकर वह भी अपने विवेक और पुरुषार्थ के बल बहुत सी बहुउपयोगी वस्तुएं उत्पन्न करेगा और मेरे मन्तव्य को पूरा करेगा।’

तात्पर्य यह है कि मनुष्य के लिए छोटे से बड़ा बनने का मार्ग अति महत्त्वपूर्ण है। जिस प्रकार जल की नन्हीं सी बूंद आगे चलकर एक सागर—जैसा रूप धारण कर लेती है, उसी प्रकार मनुष्य यदि यह समझ ले कि ईश्वर

को तय करते आगे बढ़ते चले जाते हैं और इस प्रकार अपने उद्देश्य की पूर्ति कर लेते हैं। उद्देश्यविहीन व्यक्ति अस्थिर बुद्धि के कारण जीवन में सदा असफल रहते हैं। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति ही है कि ऐसा व्यक्ति एक दिन अपना अस्तित्व खो बैठता है और तब उसे कोई नहीं जानता कि वह कब आया और कब चला गया – उसके मानव जीवन का कोई मूल्य नहीं रहता। वह उस व्यक्ति की तरह है जो तीर-कमान लेकर शिकार के लिए जंगल में तो आ गया, लेकिन उसे यह नहीं मालूम कि वह किसका शिकार करेगा? वह बिना किसी उद्देश्य के इधर-उधर भटक कर अंत में खाली हाथ ही घर लौटेगा और फिर अपने भाग्य को कोसता रहेगा।

Don Marquis ने कहा है –

**“Ours is a world where people don’t know
what they want and are willing
to go through hell to get it.”**

**(हमारी दुनिया में लोग यह नहीं जानते कि वे क्या
चाहते हैं और अपनी अनिश्चित मांग की पूर्ति के लिए
नरक भोगने को तैयार रहते हैं)**



उद्देश्य-निर्धारण के फायदे :

- उद्देश्य-निर्धारण से आपकी **इच्छाशक्ति को नई ऊर्जा** मिलती है, जिससे आप कार्य-लक्ष्य की सिद्धि के लिए उत्साहपूर्ण कर्मशील बन जाते हैं और फिर आपको कहीं भटकना नहीं पड़ता।
- उद्देश्य आपको **रचनात्मक सोच** देता है, सतर्क और स्फूर्त बनाता है, आलस्य और प्रमाद से बचाता है तथा चिंताएं, संशय अथवा भय से दूर रखता है।
- उद्देश्य **संघर्ष करने की प्रेरणा** देता है और शिखर तक पहुंचने के लिए आपके हौंसले बुलंद करता है।

सकारात्मक जीवन (Positive Life)

क्या मात्र धन कमाने में ही अपनी पूरी आसक्ति लगा देने से **पॉजिटिव लाइफ** बनती है? नहीं... क्योंकि संसार में ऐसे अनेक लोगों के उदाहरण हैं जो पैसा कमाने में तो माहिर थे, लेकिन वे धन की हवस में यह भूल गए कि जिंदगी को सार्थक कैसे बनाया जाए? अकूत सम्पत्ति के मालिक बनने के कुछ साल बाद उनका क्या हुआ, देखिए कुछ के हश्र यहां –

- उद्योगपति **रामकृष्ण डालमिया** को पैसे की हेरा-फेरी के कारण कई महीने जेल में रहना पड़ा।
- एक मामूली शेयर ब्रोकर **हर्षद मेहता** शेयरों में घोटाला करके चंद दिनों में बिगबुल तो बन गए, लेकिन बाद में पकड़े जाने पर जेल में ही हृदयगति रुक जाने से उनकी मृत्यु हो गई।
- दुनिया की मशहूर Wall Street Stock Exchange के सबसे बड़े सट्टेबाज **जैसी लिवरमोर** (Jessie Livermore) को आत्महत्या करनी पड़ी।
- एक अग्रणी स्टील कम्पनी के मालिक **चार्ल्स शॉब** (Charles Schwab) उधार की पूंजी से अमीरी जिंदगी बिताकर पांच साल बाद दिवालिया होकर मर गए।
- विश्व प्रसिद्ध पूंजीपति व्यवसायी **हॉवर्ड हुग्स** (Howard Hoogs) को एक ऐसा संक्रामक रोग लग गया कि उनका कमरा पेपर नेपकिन्स के डिब्बों से भरा रहता था और उन्हें जीवन के कई वर्ष अंतिम श्वास तक कमरे में ही गुजारने पड़े थे।

कुछ बनना है तो 'संघर्ष' करना ही होगा

सिद्धि की पहली शर्त है – संघर्ष। यह जीवन को समृद्ध और उन्नत (Elevated) बनाता है। जो लोग कठिनाइयों के भय से अपने निर्धारित कार्य आरंभ नहीं करते अथवा बाधाओं को देखकर कार्य को बीच में ही छोड़ देते हैं, वे नकारात्मक विचार वाले होते हैं और कर्तव्य से विमुख होकर संघर्ष करने से कतराते हैं। उनके लिए मेरा एक प्रश्न है कि वे जीवन को किस दृष्टि से देखते हैं? क्या सिर्फ उदर-पूर्ति के लिए ही श्रम करते रहना और फिर एक दिन गुमनामी की मौत मर जाना ही जीवन है? नहीं, यह तो मृत्यु का इंतजार है।

यदि आप जीवन से प्रेम करते हैं, तो शिखर पर पहुंचने के लिए संघर्ष से भी प्रेम करना सीखिए। **बर्ट्रैंड रसेल** ने कहा है – **‘प्रेम से डरना जीवन से डरना है और जो जीवन से डरते हैं, वे दो-तिहाई से भी ज्यादा मुर्दे हो चुके हैं।’** जीवन तो कर्म-क्षेत्र है और कठिनाइयां एवं दुःख हमारे शत्रु हैं, जिनसे हमें लड़ना है, संघर्ष करके उन पर विजयी होना है और अर्जुन की तरह यशस्वीवीर कहलाना है। सकारात्मक दृष्टि से एक विजेता की मौत मरना ही सार्थक जीवन है। **शेक्सपीयर** ने कहा है – **‘कायर अपने मृत्यु से पूर्व अनेक बार मृत्यु का अनुभव कर चुकते हैं, किन्तु वीर कभी भी एक बार से अधिक नहीं मरते।’** अतः जीवन को सार्थक बनाने हेतु आपने जो उद्देश्य निर्धारित कर रखा है, उस तक पहुंचने के लिए आप पहले यह संकल्प लें – ‘मेरे मार्ग में कितनी भी बाधाएं क्यों न आए, मैं संघर्ष के जरिए उन्हें दूर करूंगा और आगे बढ़ता ही रहूंगा।’

डेल कार्नेगी ने कहा है –

‘दुनिया में महत्वपूर्ण कार्य उन लोगों ने किए हैं, जिन्होंने कठिनाइयों में भी अपने प्रयास जारी रखे।’

162 >> असली कामयाबी

तब ऐसी स्थिति में हम कैसे कुछ बन पाएंगे? जीवन को सफल बनाने के लिए हमें संघर्ष करना ही होगा। अतः इन बातों को ध्यान में रखें –

- * जीवन-युद्ध में कोई दूसरा आपकी मदद करेगा, इस भ्रम को मन से निकाल दें। अतः किसी की सहायता के इंतजार में बैठे मत रहिए। आपको स्वयं ही उठना होगा, रास्ते की बाधाओं से जूझना होगा और स्वयं अपना फॉर्चून बनाना होगा।
- * परिश्रम, दृढ़ इच्छा-शक्ति, उत्साह एवं लगन ऐसे मानवीय गुण हैं, जो आपको आसमान की बुलंदियों पर पहुंचा देते हैं, बशर्ते कि आप हारने पर भी संघर्ष में जुटे हैं।
- * यदि आप मामूली पढ़े-लिखे हैं अथवा निर्धन हैं तो क्या हुआ? संघर्ष के मार्ग में ये रुकावटें बनने का दुस्साहस नहीं कर सकतीं, बशर्ते कि आपने कुछ बनने की ठान ली है। विश्व प्रसिद्ध **माइकल फैराडे** जब मात्र 13 वर्ष के थे, तब निर्धनता के कारण वे जिल्दसाज के यहां काम करते थे। जब सब कारीगर रात में अपने-अपने घरों को चले जाते, तब वह बैठकर उन्हीं पुस्तकों को पढ़ते, जिन पर दिन में जिल्दे चढ़ाया करते। उनकी इस लगनशीलता और कुछ बनने की प्रवृत्ति ने उन्हें महान बना दिया था।
- * संघर्ष के दौरान अपनी पकड़ मजबूत बनाएं। बालक **फर्गुसन** अपने भाई के पास बैठ जाता और जो कुछ भी उच्च स्वर में पढ़ता, उसे सुन-सुनकर ही वह बालक याद करता रहता था। इस विशेष गुण से उसने मामूली चाकू से आश्चर्यजनक वस्तुओं का निर्माण कर दिखाया। ऐसे अनेक अन्य व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने विधिवत् शिक्षा ग्रहण नहीं की, लेकिन 'कैच' करने की शक्ति से वे सफलता के शिखर पर पहुंच गए थे।

अतः आप स्वयं उठिए, अपने साहस और उत्साह के साथ संघर्ष रूपी विजय रथ पर चढ़ जाइए और सफलतापूर्वक अपने जीवन पर दुष्प्रभाव डालने वाले शत्रुओं पर विजय पाइए।



‘क्रोध’ को सही दिशा दीजिए (Anger needs positive direction)

संसार में मनुष्य की कामनाएं अनंत होती हैं और एक के बाद दूसरी इच्छा उत्पन्न होने का क्रम जारी रहता है, लेकिन समयाभाव के कारण इच्छा-पूर्ति में अवरोध आ जाने से मनुष्य को जीवन दुखमय लगने लगता है। परिणामस्वरूप उसे तनाव, चिंता, दुःख व क्रोध का सामना करना पड़ता है और इस क्रोध के कारण वह कई बीमारियों और मानसिक रोगों का शिकार होने लगता है और अंत में अपनी बुद्धि का नाश कर लेता है। इसीलिए युगों-युगों से **काम, क्रोध और लोभ** को मनुष्य का शत्रु बताया गया है और कहा गया है कि इनसे बचो या फिर इन्हें सही दिशा देकर एक चरित्र-रचना रचो। इस संदर्भ में यहां एक उदाहरण दिया जाता है –

- **महात्मा गांधी** को जब किसी से यह पता लगा कि चाय बागान कर्मियों के साथ मालिक क्रूर व्यवहार करता है और वह 14 घंटे मजदूरी करने वाले स्त्री-पुरुषों को बहुत-थोड़ी मजदूरी देता है, तो उन्होंने बागान में स्वयं जाकर स्थिति देखने की सोची। उनके आगमन का समाचार जानकर उस जागीर का मालिक क्रोधित हो उठा और उसने गांधीजी को देखते ही गोली मारने की कसम खाई। कुछ लोग गांधीजी के पास गए और उन्होंने जो सुना था, वह उन्हें बता दिया। उन्होंने निन्नत की, ‘बापूजी उस जागीर से दूर रहें। आप यहां से दूर किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाएं।’ यह सुनकर गांधीजी केवल मुस्करा दिए।

उसी रात निर्जन पहाड़ी के ढलान पर घोर अंधेरे में जागीर के मालिक का द्वार किसी ने खटखटाया। दरवाजा खोलकर वह

आगंतुक को देखता रह गया। उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। सामने गांधीजी बिल्कुल अकेले, निहत्थे खड़े थे। वे उस मालिक से बोले – ‘भाई, मैंने सुना है कि आप मुझे गोली मारना चाहते हैं। मैं आपके सामने खड़ा हूँ, आप जो भी करना चाहें कर सकते हैं। किसी को इस बात की कानों-कान खबर नहीं होगी।’ जागीर का क्रोधी मालिक अवाक रह गया। उस विस्मरणीय मुलाकात के बाद उसने गांधीजी को वचन दिया कि वह कभी क्रोध नहीं करेगा, बागान में काम करने वालों को मुनासिब वेतन देगा तथा उनके साथ अच्छा व्यवहार करेगा।

इसी प्रकार का एक और उदाहरण यहां देखिए –

- नई शताब्दी की शुरुआत में स्विट्जरलैंड के जिनेवा नगर में एक वैज्ञानिक बैरोमीटर पर काम कर रहे थे। उनकी खोज का एक अंग यह था कि प्रतिदिन भिन्न-भिन्न मौसम और तापमान की स्थिति में वातावरण में हवा के दबाव को रिकॉर्ड करना और अलग-अलग नतीजे कागज पर लिख लेना। इस खोज पर उन्होंने बीस साल से भी अधिक समय तक परिश्रम किया था।

20 साल की कड़ी मेहनत से जमा किए गए अभिलेख कागजों के एक बड़े ढेर के रूप में उनकी मेज पर पड़े थे। उनकी कई साल पुरानी नौकरानी एक हफ्ते की छुट्टी पर चली गई। एक दिन वैज्ञानिक रोजाना की तरह शाम की सैर के लिए निकल गए। वापिसी पर उन्होंने देखा कि मेज से कागजों का ढेर गायब था और उसकी जगह नए साफ, सफेद कोरे कागज पड़े थे। उन्होंने नई नौकरानी से पूछा, ‘मेरे कागज कहां हैं?’ वह बोली, ‘मैं आपका कमरा साफ कर रही थी तो मैंने आपके पुराने, गंदे और दीमक लगे कागज आग में झोंक दिए।’ किसी भी सज्जन पुरुष को गुस्सा दिलाने के लिए यह बात काफी थी, लेकिन उन्होंने अपने सिर पर हाथ रखकर सिर्फ इतना कहा, ‘हे भगवान, तेरी इच्छा पूरी हो।’

इस उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि क्रोध पर विजय पाने के लिए सबसे उत्तम तरीका यह है कि ऐसा मानो कि जो

उदाहरण-सूची

क्र. सं.	पृष्ठ नं.
1. सम्राट अशोक	1
2. एक बारह वर्षीय बालक	3
3. श्रीकृष्ण एवं ब्रज-गोपियां	8
4. राबिया	11
5. गुरु एवं शिष्य	13
6. राजा भोज और किसान	14
7. स्वामी विवेकानंद	15, 50, 55, 81
8. एक ब्राह्मण	17
9. सम्राट बिंबिसार	18
10. संत कबीर	19
11. बाल गोपाल कृष्ण गोखले	19
12. सम्राट अशोक और वैश्या बिंदुमति	20
13. एक फकीर के स्वप्न में भगवान	21
14. एक लुहार	23
15. कोलकाता के दुर्गाचरण बाबू	25
16. बिल गेट्स	26
17. श्रीकृष्ण, पांडव एवं बर्बरीक	28
18. गौतम बुद्ध और चतुर लड़का	29
19. गांधीवधारी अर्जुन	29
20. पुरी के राजा इंद्रद्युम्न	30
21. हेनरी फोर्ड	31, 97
22. संत रैक्य और राजा जनक	32
23. चीन के शुनशुनाओ और किनबु	33
24. एक राजा और ऋषि	33
25. एक गड़रिया	36
26. थॉर्नबरी और बुढ़िया	40

198 >> असली कामयाबी

85.	एक व्यक्ति का कारोबार	126
86.	लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक	129
87.	बॉब लुज	131
88.	रोम के प्रेसीडेन्ट टायलर	137
89.	चीन के संत ताओ बू चीन	138
90.	संत रैदास	139
91.	एक किसान और बदली	141
92.	भगवान और भक्त	143
93.	मिस्टर ग्रे और पुत्र चार्ल्स	146
94.	सतयुग और कलियुग	148
95.	जापान के कर्मचारी	149
96.	कार्टूनिस्ट वाल्ट डिजनी	154
97.	तैमूर और एक चींटी	156
98.	भगवान बुद्ध और नन्हीं गिलहरी	157
99.	मीरा बेन (महात्मा गांधी की शिष्या)	158
100.	डॉ. एनी बेसेंट	159
101.	गुरु द्रोणाचार्य और अर्जुन	164
102.	बेंजामिन डिजरायली	167
103.	महात्मा गांधी	179
104.	एक वैज्ञानिक	180
105.	महाराजा अंबरीष और दुर्वासा मुनि	184
106.	एक संत और शिष्य	191



INNER VOICE

Life is a journey like an ocean, which begins even before we realize that it has. The transformation of a child into an adult over the years can not be explained in words. One has to feel the slow changes taking place in the person.

It's up to us to decide what precisely do we need and what are our priorities. The path ahead is to be traced out carefully. There is no demarcation line between Success and Failure.

One mistake can lead us to failure and in the same way a single right step can bring us forth the dream of success. So proper planning is a must for successful accomplishment of tasks. To be an absolute winner we have to be practical and methodical in our approach. The old ethics governing our activities have given a way to more workable principles.

***Life is not only to be alive
but to be enjoyed,
to be shared with others
and to be satisfied.***

So let us be in our consciousness and never try to imitate others guided by a false impression

***Hence, the 'inner, voice' is the best guiding
force for the living entity.***

Now listen to it.

- The Gita





उपकार कैरियर डेवलपमेंट सीरीज



असली कामयाबी

"Try not to become a man of success but rather to become a man of value."

— Albert Einstein

Life is not only to be alive but to be enjoyed, to be shared with others and to be satisfied.

— The Gita

Best Seller Book 'डायनेमिक्स ऑफ पर्सनेलिटी डेवलपमेंट' के लेखक राधाधरमण अग्रवाल स्वतंत्र रूप से व्यावसायिक व प्रबंधन सलाहकार और विचारवान लेखक हैं। इनके चिंतन भरे लेख पर्सनेलिटी डेवलपमेंट, सेल्फ इम्प्रूवमेंट, धर्म-संस्कृति एवं सामान्य विषयों पर समाचार-पत्र व पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। प्रस्तुत पुस्तक 'असली कामयाबी' के अतिरिक्त 'एचीविंग गोलस', 'बेसिक्स ऑफ सक्सेस', 'Effective Team Management', 'महापरिवर्तन' आदि इनकी बारह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। ये निजी स्टाइल में भावपूर्ण कविताएं हिंदी व अंग्रेजी में लिखते हैं, जो प्रकाशित होती रहती हैं। ये कई बिजनेस कॉन्फ्रेंस तथा सोशल इवेंट्स आयोजित करने में सफल रहे हैं।

Other Books by the author



उपकार प्रकाशन, आगरा-2